जंगल की आग
और ताई
पलामू टाइगर रिज़र्व
दक्षिणी प्रमंडल

-: प्यारे पाठकों के लिए संदेश :-

जलवायु परिवर्तन का एक भीषण दुष्परिणाम वन अग्नि की घटनाओं में वृद्धि भी है। विगत वर्षों में वनों में आग लगने की घटनाएँ पूरे विश्व में अप्रत्याशित रूप से बढ़ी हैं। वर्ष 2021 में भारत में वन अग्नि से संबंधित एलर्ट की संख्या विगत पाँच वर्षों में सर्वाधिक है। इनमें से अधिकांश वन अग्नि की घटनाएँ उत्तरी भारत के हिस्सों में रही हैं।

वनों में आग की घटनाएँ मुख्यतः मानवकृत होती है। महुआ चुनने के लिए पेड़ के नीचे सफाई करने के उद्देश्य से लगाई आग प्रायः अनियंत्रित होकर पास के जंगलों में फैल जाती हैं। खेतों में फसल के अवशेष जलाने से भी वन अग्नि की घटनाएँ होती हैं।

वन अग्नि के घटनाओं से वन संपदा को अपार क्षति पहुँचती है। कई महत्वपूर्ण वृक्ष की प्रजातियाँ, औषधीय, जड़ी-बूटियों की प्रजातियाँ नष्ट हो जाती हैं। वन्यप्राणियों के पर्यावास को भी नुकसान पहुँचता है। जिन वनों में प्रतिवर्ष वन अग्नि की घटनाएँ होती हैं, वैसे वन धीरे-धीरे बंजर हो जाया करते हैं। इसका सीधा असर वनों की वर्षा जल को सोखने की क्षमता पर पड़ता है। वृक्ष विहीन भूमि पर वर्षा से कटाव की समस्या होती है एवं उनका मरूस्थलीकरण प्रारम्भ हो जाता है।

इसका सर्वाधिक दुष्प्रभाव वनों की समीप रहने वाले मानव जनसमुदायों के जीवन पर पड़ता है। पानी एवं जलावन के लिए लकड़ियों की समस्या पैदा होती है।

अतः ऐसी परिस्थिति में वन अग्नि को रोकने के लिए लोगों को जागरूक करना अत्यावश्यक है। इसी प्रयास की कड़ी में बच्चों के कॉमिक्स पढ़ने की रूचि को ध्यान में रखकर ''जंगल की आग और ताई'' चित्रकथा तैयार की गई है।

इस चित्रकथा के पाठक प्यारे नन्हें सिपाहियों से मैं यह आशा करता हूँ कि वे वनों में लगने वाली आग के दुष्प्रभावों के बारे में अपने मित्रों, परिजनों, सहपाठियों के साथ चर्चा करेंगे एवं पलामू व्याघ्र आरक्षण के इस प्रयास को बल प्रदान करेंगे।

मुकेश कुमार
(भा.व.से.)
उप-निदेशक,
पलामू व्याघ्र परियोजना,
दक्षिणी प्रमंडल, मेदिनीनगर।

इनका नाम रूक्मिणी देवी है,परन्तु सब लोग ताई कहते हैं। ताई उच्च शिक्षा प्राप्त एक जागरूक महिला हैं। किसी से कोई भी बात ये तर्क के आधार पर करती हैं। बिना ठोस वजह के ये किसी भी मामले में हस्तक्षेप नहीं करतीं।इनकी उम्र 55 वर्ष है,लेकिन इनमें युवाओं वाली जोश होती है।
हर क्षण इनका मोबाइल फोन व्यस्त रहता है। किसी न किसी बहाने से किसी न किसी का फोन आता रहता है।
ताई,मेरे रिंकु का जॉब छूट गया है। वह अब टैंशन में रहता है.... उसका टैंशन देख कर मेरा टैंशन बढ़ जा रहा है। क्या करें हम ?
टैंशन मत लीजिए शेखर भाई, आपके बेटे को पशुओं से बहुत प्रेम है....गौ पालन करे, मुझे विश्वास है दूध का व्यवसाय अच्छा चलेगा ।

ताई कभी भी किसी से कोई बैर भाव नहीं रखतीं।अकस्मात उदार हृदय से सभी को मदद करती हैं। सभी लोग उनसे सहायता पाकर खुश रहते हैं।
शुक्रिया ताई ।
भईया, आपका बेटा साईकिल से गिर गया था। कोई भी वाहन हो, सम्भल कर ही चलानी चाहिए.....संयोग था कि मैं उधर से गुजर रही थी। खैर सम्भालो अपने बेटे को....
गम्भीर से गम्भीर विषयों को मजाक-मजाक में आसानी से लोगों को समझा देती हैं।
ताई अकेली हैं ,लेकिन कभी अकेली होती नहीं हैं। हमेशा दो-चार लोगों के साथ किसी न किसी विषय पर विचार-विमर्श करती रहती है।
थाली में परोसा हुआ भोजन को कभी बर्बाद नहीं करनी चाहिए, जो लोग ऐसा करते हैं, वे मूर्ख होते हैं और यहां, इस टेबल पर कोई भी बच्चा मूर्ख नहीं है....सही कहा न....
जी ताई, बिलकुल

कभी इनका भरा पूरा परिवार था। इनके घर में हमेशा उत्सव सा माहौल बना रहता था।

छोटी बेटी की रुचि पेंटिंग के क्षेत्र में थी।

और बड़ी बेटी को संगीत में गहरी दिलचस्पी थी। वह एक अच्छी सितार वादक थी

कुछ सालों पहले हुई एक रेल दुर्घटना में उनकी पूरी दुनिया उजड़ गयी और ये अकेली जीवित बच गयी थीं।
जीवन में गहन अंधेरा छा गया था। इनकी हरी-भरी दुनिया में विरानी पसर गयी थी। इन्हें जिन्दगी बोझ सी लगने लगी। अपना कहने के लिए उनका अपना कोई नहीं बचा था।
वे कुछ दिनों तक मातम मनायीं। दुखों में घुली रहीं। खूब रोयी....आंसू बहायी
फिर नियति मान कर सब कुछ भूलना ही उनके हित में था।
एक दिन उन्हें स्वयं बोध हुआ, गमों के सहारे जीवन नहीं चलता। सच को स्वीकार कर आगे की जिन्दगी जीना ही असली जिन्दगी है।
इसलिए ताई अपनों को खोने के बाद ,अपने शहर के लोगों को ही अपना मान लिया।

फिर ताई सामाजिक कार्यों में बढ़ चढ़ कर भागीदारी निभाने लगी। खाली समय में गरीब बच्चों को अपने घर पर निशुल्क शिक्षा देतीं।

स्वरोजगार शुरू करने वाले जरूरतमंद लोगों को बैंक से ऋण में ग्रांट बन जाती है।

महिलाओं को सिलाई-कढ़ाई का काम सिखला कर उन्हें आत्म निर्भर बनाने लगी।

कोई भी मामला हो,स्वस्थ समाज के पक्ष में ताई हमेशा सेवा देने के लिए तत्पर रहती हैं।
एक दिन ललन सिंह की ओर से शादी में शामिल होने का निमंत्रण मिला और वे तुरन्त तैयार हो गयीं।
ताई निमंत्रण पाकर बहुत खुश थीं।
अच्छा रहेगा कुछ दिन गांव के शुद्ध वातावरण में रहना.....
दूसरे दिन ताई ललन सिंह के परिवार के साथ गांव के लिए निकल गयीं।

गांव का रास्ता जंगल से होकर गुजरता था। जंगल के रास्ते गांव जाते समय ताई बहुत खुश थी।
सड़क के किनारे-किनारे पहाड़ और पहाड़ों पर छोटे- लम्बे पेड़। बहुत सुन्दर वन का वातावरण लग रहा था।
जंगल का रमणीय वातावरण देख कर ताई अचानक ड्राइवर को गाड़ी रोकने को कहती हैं।
भईया तनीक गाड़ी रोकियेगा।

गाड़ी रुकते ही ताई उसमें से झटपट बाहर निकलीं।
ललन सिंह ने पानी का बोतल उन्हें देने की कोशिश की।
लीजिए ताई
पानी का बोतल! किसलिए ....?
शायद आपको उल्टी लग रही होगी !
धत्त ये बुड़बक.....हम तो यहां थोड़ा घूमने-फिरने के विचार से रुके हैं। इतना सुन्दर प्राकृतिक वातावरण को हम नजरअंदाज करके कैसे आगे जा सकते हैं।
वास्तव में जंगल की संस्कृति ही भारत की असली संस्कृति है।
जंगल हमारी बढ़ती हुई जनसंख्या को जिन्दा रखने का सबसे बढ़िया स्रोत है....पेड़ से जल,जल से अन्न और अन्न से जीवन है।

हम जीवमंडल के बजाय तकनीकी मंडल में रहते हैं, इसलिए ऑक्सीजन की आवश्यकता हमें सब जीवधारियों से पंद्रह गुनी अधिक है।

मनुष्य को ऑक्सीजन की दैनिक आवश्यकता सोलह किलो ग्राम है। यह ऑक्सीजन पचास टन भार के पांच पेड़ों से प्राप्त होती है।

इसके अतिरिक्त पेड़ हमारी धूल और धूआं पैदा करने वाली विनाशकारी सभ्यता को समाप्त करने वाले महादेव भी हैं।

नगरों में जहां जनसंख्या का घनत्व अधिक है और प्रदूषण भी अधिक है,वहां मानव अस्तित्व के लिए अधिकाधिक पेड़ों की आवश्यकता भी है।

ताई के पीछे-पीछे ललन सिंह के बच्चे भी गाड़ी से निकल आये थे।
अरे अब तुम लोग कहां चल दिये...
ललन भाई,आने दो उन्हें....मैं हूं न।
आपको इनके बारे में नहीं पता.बहुत शैतान हैं... आपको परेशान कर देंगे।
आरे बच्चे शरारत करते हैं। बचपन शरारत के लिए ही होता है...ललन भाई।
आप नहीं किये थे क्या ?
बचपन में भगवान श्री कृष्ण भी बहुत शरारत किये हैं, परन्तु उनकी शरारत को तो लोग लीला कहते हैं।
भगवान शरारत करें तो लिला और हमारे बच्चे करे ते शैतानी! सभी बच्चे भगवान के रूप होते हैं।
आप लोग गाड़ी में बैठिए,हम जंगल की सैर कर के आते हैं... क्यों बच्चों ठीक है न।
जी ताई... हा...हा...हा

ताई के साथ बच्चे जंगल घूम रहे थे।उन्हें बहुत आनन्द आ
था। ये बच्चे पहली बार प्रकृति के बीच आये थे। ताई भी
थी।जंगल के मग्न वातावरण में ताई भी बच्चा बन गयी थी।
वहां मग्न होकर नाच रही थीं। बंधे बाल भी खुल गये थे।
देने के लिए वे अपनी सुध-बुध खो बैठी थीं।

वाह ताई वाह...आज आपका बिंदास रूप देख कर हमें बहुत मजा आया...
चुप बदमाश! आज तुम दोनों ने जो कुछ भी देखा, उसे किसी से बताना नहीं।
दरअसल पलामू टाइगर रिजर्व, पर्यटन के हिसाब से बहुत सुन्दर व प्राकृतिक वातावरण लेकर बसा हुआ है। यूंही नहीं लोग यहां घूमने चले आते हैं। यह सभी को आकर्षित करता है....।
देख रहे हो कितना सुन्दर वातावरण है। जब सारे पेड़ खिल रहे होते हैं। तब गुलमोहर खुशी का रंग बिखेरता है। गुलमोहर तो हम आम बोलचाल में कहते हैं,लेकिन इसके बहुत सारे नाम हैं
जैसे कि...
जैसे कि गोल्ड मोहर, पीकॉक फ्लावर, फ्लेम ट्री, फ्लेर डी पैराडाइज...
वाऊ
ये सब तो इसके प्रचलित नाम हैं, लेकिन वानस्पतिक नाम है डेलोनिक्स रीजिया।
..पर क्या ?
अच्छा है,पर...
उच्चारण में दिक्कत होगी..हा.. हा....हा....

गुलमोहर जंगलों में ही नहीं, बाग़ों में भी लगाये जाते हैं। इसकी पत्तियां औषधियों में काम आते हैं। आयुर्वेद के जानकार बताते हैं कि इसकी पत्तियां गठिया व वात रोगों में बहुत उपयोगी होती है।
वाह! वाकई अच्छी जानकारी है।
हां बिलकुल।
जंगल में विभिन्न तरह के पक्षी दिखाई दे रहे थे।उन्हें देख कर बच्चे बहुत खुश थे।
बाप रे! इतने सुन्दर सुन्दर पंछी हम कभी नहीं देखे थे।
ऐसे ही पेड़ जीवन के लिए उपयोगी है। हम मनुष्यों के सबसे बड़े मित्र ये पेड़ होते हैं। पीपल,बरगद, करंज जैसे कई पेड़ों की हमसब पूजा भी करते हैं.....

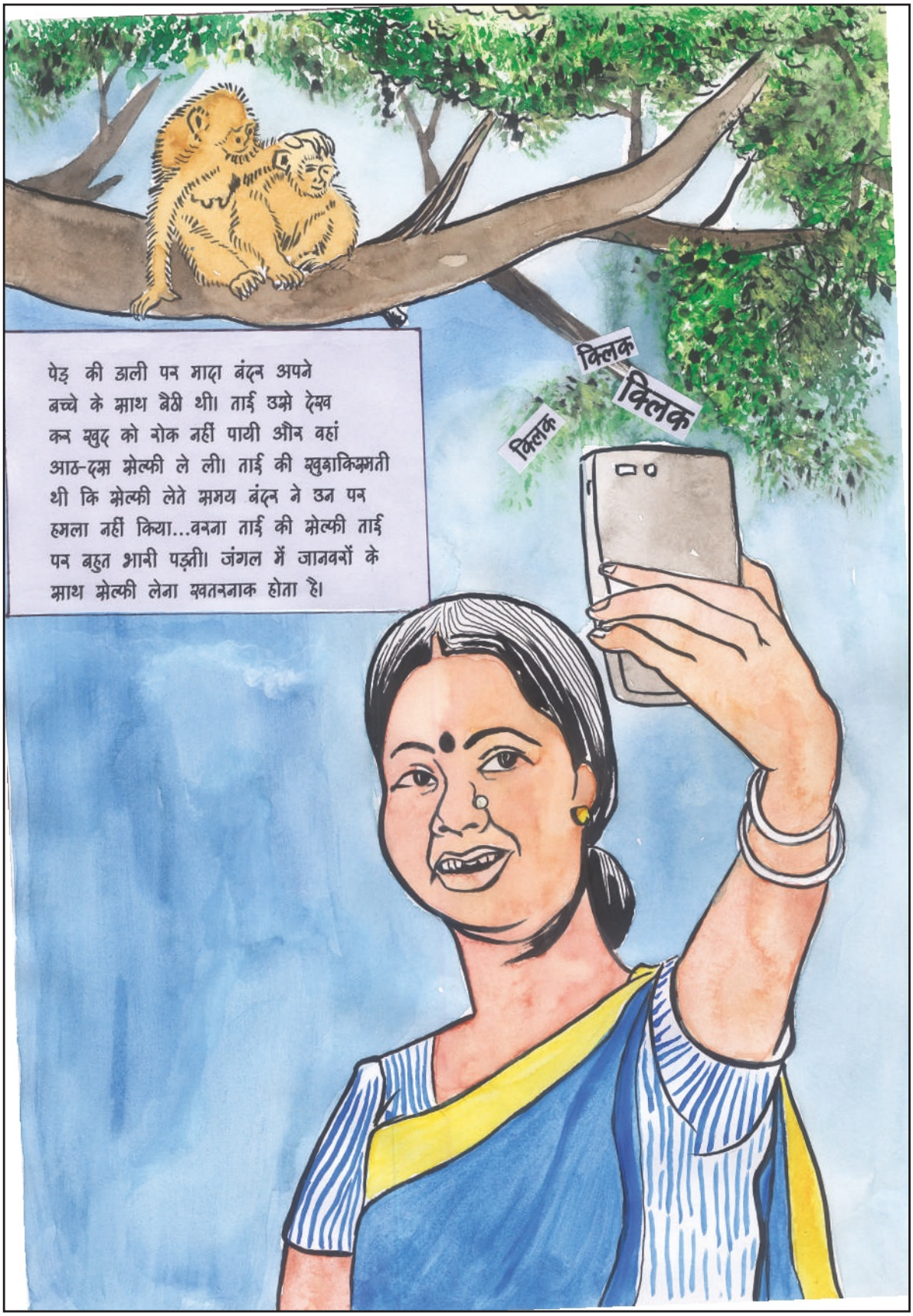
पेड़ की डाली पर मादा बंदर अपने बच्चे के साथ बैठी थी। ताई उसे देख कर खुद को रोक नहीं पायी और वहां आठ-दस सेल्फी ले ली। ताई की खुशकिस्मती थी कि सेल्फी लेते समय बंदर ने उन पर हमला नहीं किया...वरना ताई की सेल्फी ताई पर बहुत भारी पड़ती। जंगल में जानवरों के साथ सेल्फी लेना खतरनाक होता है।
क्लिक
क्लिक
क्लिक

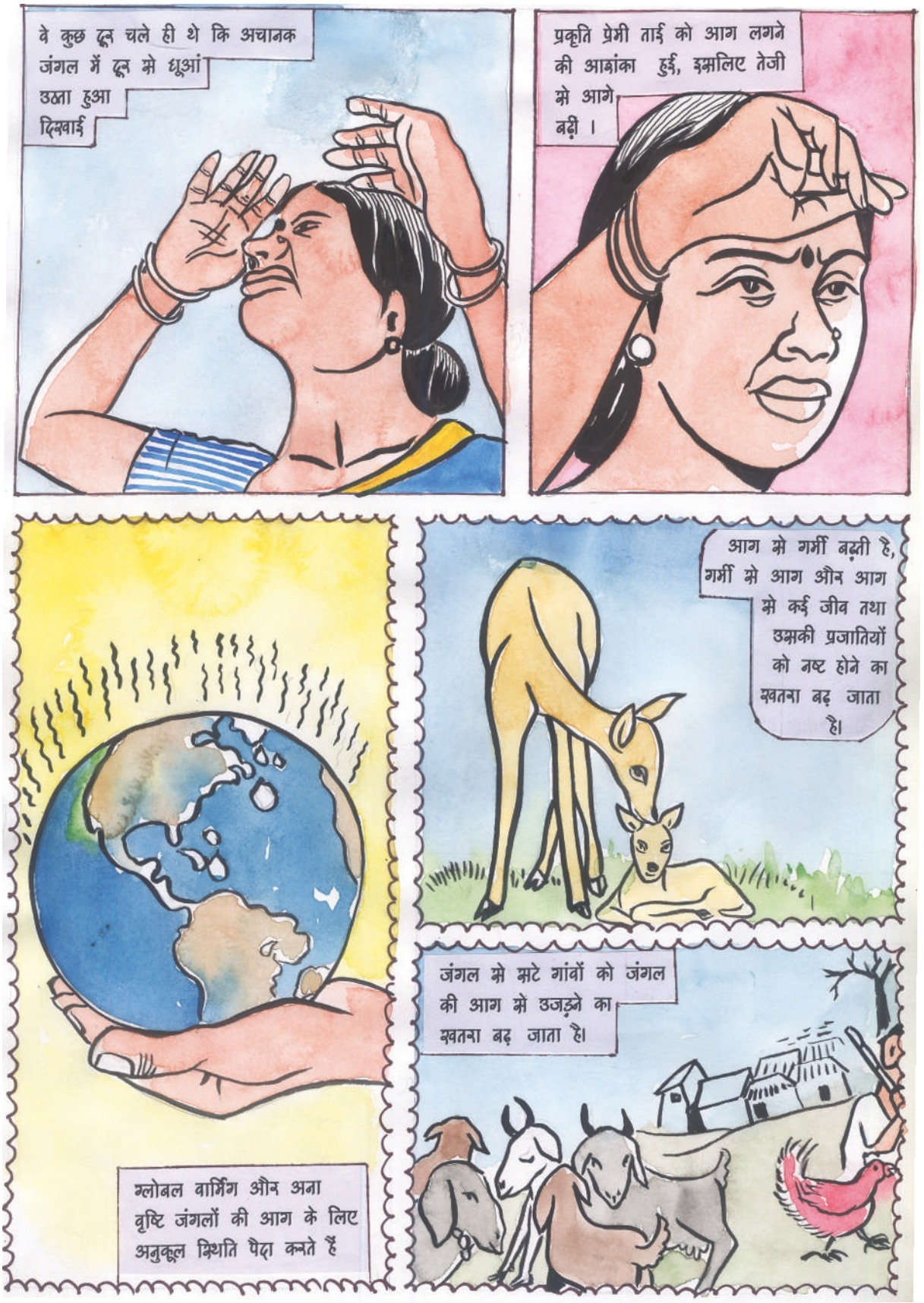
वे कुछ दूर चले ही थे कि अचानक जंगल में दूर मे धूआं उठता हुआ दिखाई
प्रकृति प्रेमी ताई को आग लगने की आशंका हुई, इसलिए तेजी मे आगे बढ़ी ।
आग मे गर्मी बढ़ती है, गर्मी मे आग और आग मे कई जीव तथा उसकी प्रजातियों को नष्ट होने का खतरा बढ़ जाता है।
जंगल मे सटे गांवों को जंगल की आग मे उजड़ने का खतरा बढ़ जाता है।
ग्लोबल वार्मिंग और अना वृष्टि जंगलों की आग के लिए अनुकूल स्थिति पैदा करते हैं

जंगल में आग लगने के कारण कईबार हिंस्रक पशु अपनी जान बचाने के लिए आसपास के गांवों में घुस आते हैं और वहां तबाही मचाते हैं।
परन्तु ताई ,ये आग लगती कैसे है?
गांव वाले पालतु मवेशियों के लिए चारा तथा जलावन के लिए लकड़ी लेने हमेशा जंगल आते हैं।
कईबार उनकी लापरवाही से भी जंगल में आग लगती हैं। बीड़ी अथवा सिगरेट पीकर सूखी पत्तियों के ढेर पर फेंक देना भी जंगल की आग के लिए बड़ा कारण होता है।

जंगल क्षेत्रों के माफिया और लकड़ियों के ठेकेदार भी अपने फायदे के लिए जंगलों को जलाते हैं।
जंगली जानवरों को इन्सानी बस्तियों से दूर रखने के लिए भी गांववालों के द्वारा आग लगायी जाती है।
वनकर्मियों के द्वारा ही आग लगानी चाहिए,जिससे किसी तरह की जान-माल की हानि नहीं होती।
छोटी सी गलती हाहाकार मचा जाती है। आग को कभी भी कमतर नहीं समझना चाहिए।

महुआ बिनने के लिए भी लोग जंगल में आग लगाते हैं।
छोटे-छोटे इन कारणों के कारण जंगल की आग को विकराल रूप दे देते हैं और पर्यावरण का अत्यानाश कर देते हैं।

हल्की आग ,जो वन विभाग के उच्च अधिकारियों की देख-रेख में लगायी जाती है,उससे जंगल के शुष्क पदार्थों का नाश हो जाता है। जिसके कारण बड़ी आग की सम्भावना कम हो जाती है।

यदि लम्बे अरसे तक जंगलों में छोटे स्तर की आग वनकर्मियों के द्वारा नहीं लगायी जाये ,तो अधिक शुष्क पदार्थ ,यानी सूखे पत्ते जंगलों में जमा हो जाते हैं।
तो इससे क्या होगा ?

इससे बड़ी आग का खतरा बढ़ जाता है। आग के कारण बिना पेड़-पौधों वाले क्षेत्रों में मूसलाधार वर्षा के साथ उपजाऊ मिट्टियां अच्छी-खासी बह जाती हैं।

मिट्टियों का बहना किसी भी क्षेत्र के लिए अपूरणीय क्षति होती हैं। क्योंकि हम जानते हैं कि एक सैंटीमीटर मिट्टी की परत बनने में लगभग 500 से 1000 वर्ष लग जाते हैं।
लगातार लगने वाली आग से मिट्टी की उर्वर क्षमता खत्म हो जाती है।मिट्टी के सारे पोषक तत्व मर जाते हैं।
भूमि में पोषक तत्वों,नमी तथा जलधारण क्षमता कम होने से बहुत से गुणकारी पेड़...एवं पौधे खत्म हो जाते हैं।
बाप रे बाप..... ऐसा.....

हां, पेड़ की जलधारण क्षमता कम होने के कारण जलस्तर नीचे गिरने लगता हैहैंड पंप,कुआं,तालाब सब सूख जाते हैं।एक घड़े पानी के लिए लम्बा सफर तय करना पड़ता है।

गांव तथा नगरों में सूखा व अकाल की सम्भावना बढ़ जाती है।

तेज बारिश से पहाड़ों से भूस्खलन और मिट्टी का कटाव व्यापक रूप से होता है।

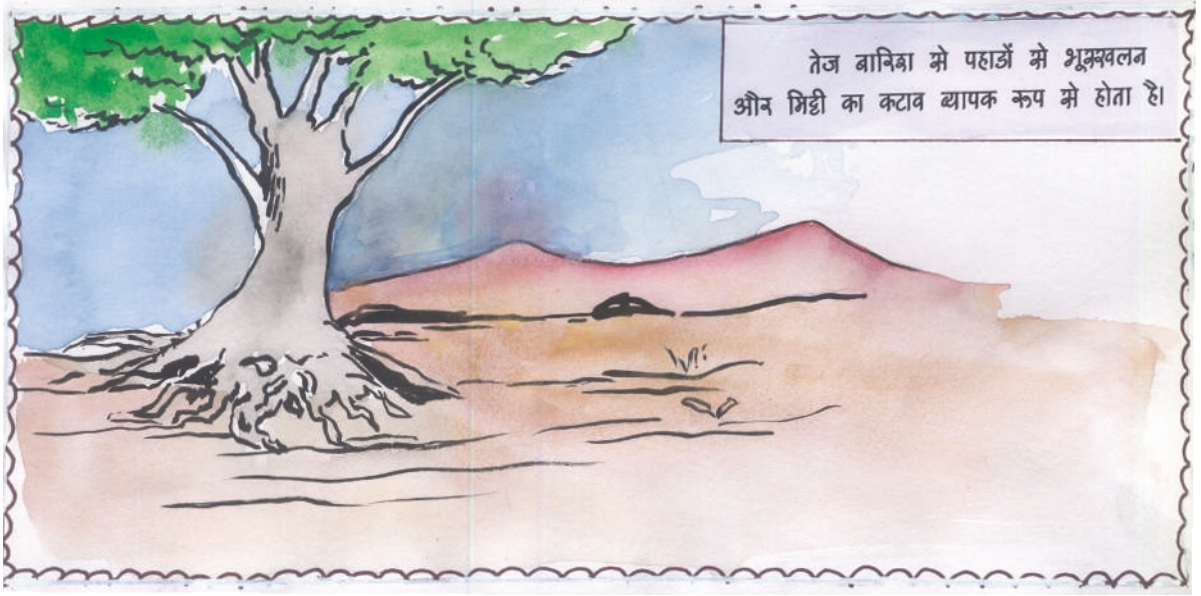

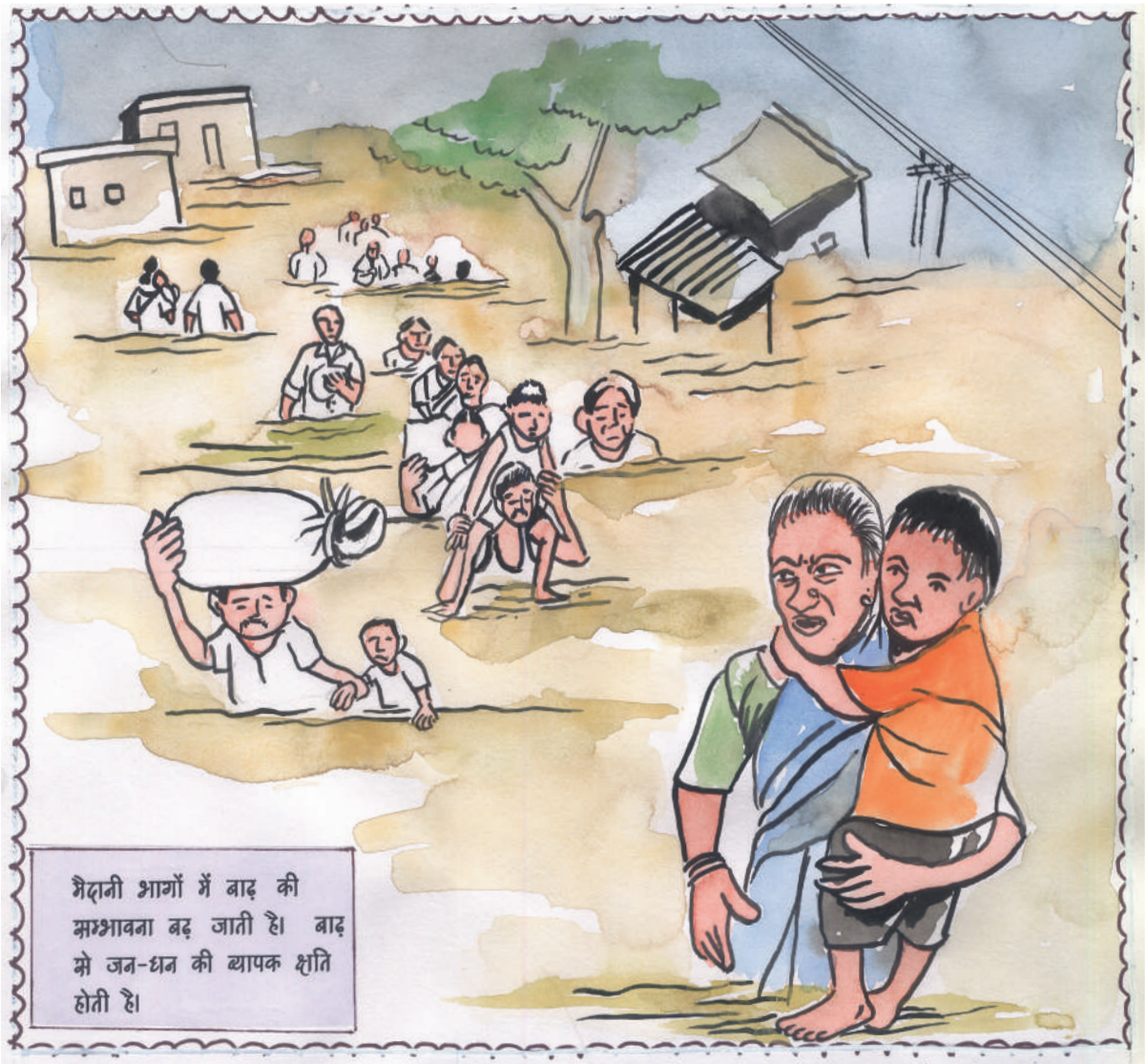
मैदानी भागों में बाढ़ की
सम्भावना बढ़ जाती है। बाढ़
से जन-धन की व्यापक क्षति
होती है।

जानवरों के चारागाह समाप्त हो जाते हैं।उनके
लिए भोजन की समस्या खड़ी हो जाती है।

पशुपालकों को पशुओं के साथ पलायन करना अनिवार्य हो जाता है।

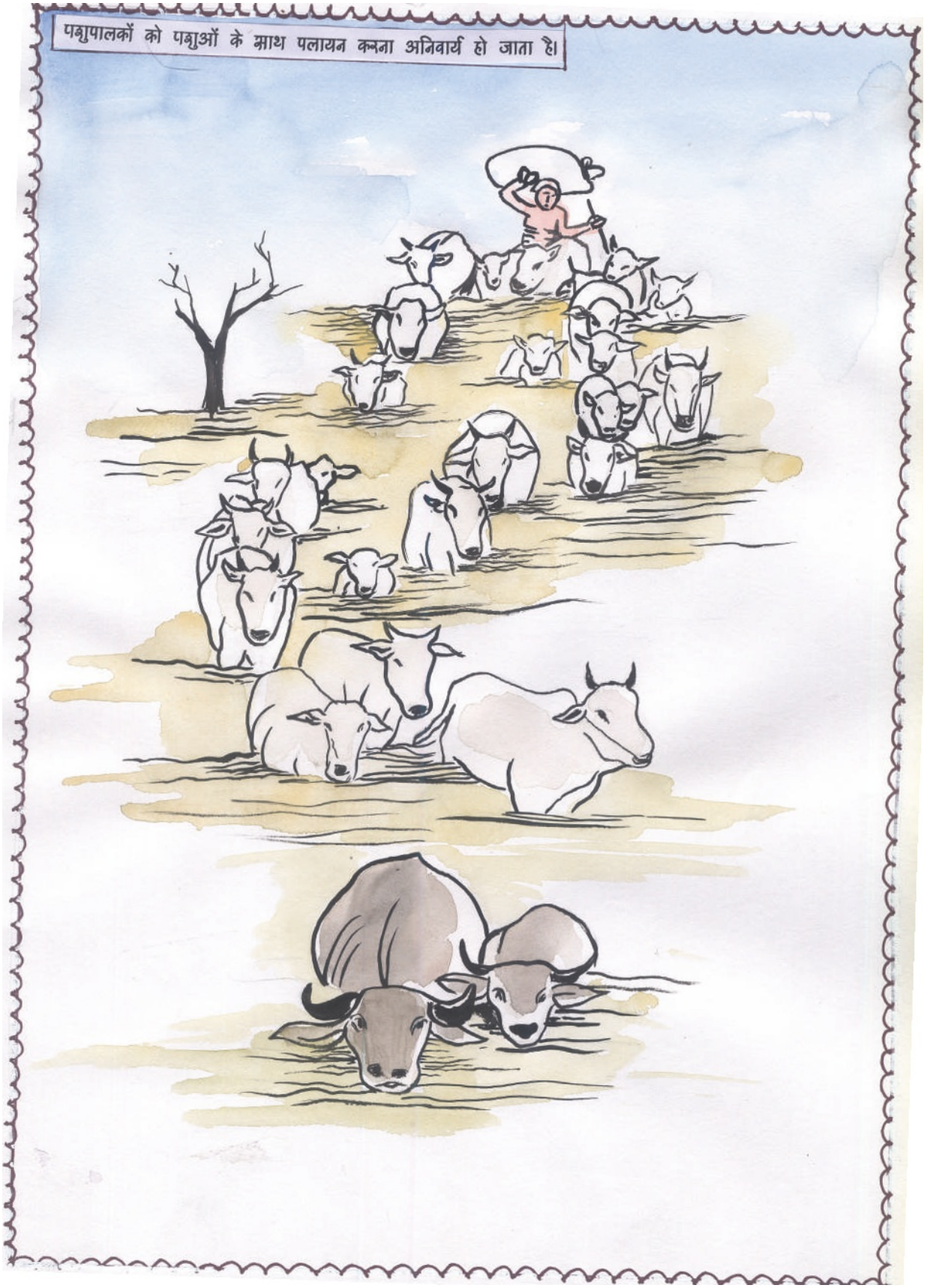

जंगल जलकर समाप्त होने के कारण पक्षियों तथा छोटे जानवरों के आवास छीन जाते हैं।
इसलिए जंगलों को बढ़ावा देने के लिए चौड़ी पत्तियों वाले पेड़ जैसे खड़िक,तुन,भीमल, बांज,शीशम इत्यादि का रोपण करना जरूरी होता है।
जंगल पशु-पक्षियों का घर-संसार है....यदि कोई हमें ,हमारे घर पर अधिकार करेगा,तो हमें बुरा लगता है,दुख होता है।उसी तरह पशु-पक्षियों को भी दुख होते होंगे।

जंगल सुरक्षित रहेंगे तो ही ,पृथ्वी सुरक्षित होगी। इसलिए जंगल को नुकसान पहुंचाने से पहले हरेक को अपने जीवन के बारे में जरूर सोचना चाहिए ।जीवन के लिए मिट्टी,वायु और जल ही सबसे बड़ी जरूरत है और इसे संतुलित करने का भार पेड़ों पर ही होता है।

लापरवाही से लगने और फैलने वाली आग को जन जागरूकता से ही नियंत्रित की जा सकती है।सभी को जानना जरूरी है कि जंगल से ही गांव व शहर आबाद है।
बिलकुल सही सोच है।
जंगल से सटे बस्तियों के लोग अनजाने में बहुत बड़ा खतरा मोल लेते हैं.....जंगल की आग सिर्फ जंगल तक ही सीमित नहीं रहती।
वाकई इसकी बातें समझदारी पूर्ण है।
भागो....सब लोग भागो जल्दी मनुष्यों की मति मारी गयी है।
हे भगवान उन्हें सद्बुद्धि दो..... हमारा घर न उजाड़े .....
वह मानव बस्तियों तक पहुंच कर हाहाकार मचा देती है।

वैज्ञानिकों एवं पर्यावरण विदों के अनुमान के अनुसार हाल के वर्षों में धरती पर जंगल की आग की घटनाएं बहुत ज्यादा बढ़ी हैं।
ओह..
कभी-कभी घर के चूल्हे को भी लापरवाहीवश छोड़ दिया जाये , तो वह चूल्हे की आग खतरनाक हो जाती है,उसी तरह जंगली जानवरों से गांवों को बचाने के लिए जंगल की सीमा पर लगयी गयी आग खतरनाक हो जाती है।

वाह! कमाल की महिला है....यह बात हमें भी पता नहीं थी।
जंगल की सुरक्षा सिर्फ सरकार और वन विभाग का दायित्व नहीं है,हम सबका है.....पेड़ हैं तो ही हम हैं।
बच्चों से बातें करते-करते ताई धुआं वाले स्थल पर पहुंच गयी थी। वहां पहुंच कर ताई को राहत मिली,वहां वनकर्मियों के द्वारा बिखरे सूखे पत्तियों को जलाया जा रहा था।
सचमुच ताई.....बातों बातों में हमें बहुत सारी जानकारियां मिल गयी,वरना हम तो जंगल की आग से एकदम अनजान थे।
जंगल की सुरक्षा से प्रकृति मां प्रसन्न होती हैं और आशीर्वाद देती हैं।जंगल जितना हरा-भरा रहेगा ,हम उतना ही खुशहाल रहेंगे।

जंगल को बचाने के लिए सूखी पत्तियों में उनके कर्मचारियों के द्वारा ही आग लगानी चाहिए। यह बात हमेशा याद रखना।
जी ताई!
बातों-बातों में ही हम अब बहुत दूर निकल आये हैं...
आयं
हां....चलो अब वापस चलते हैं।तुम्हारी मम्मी -पापा को चिन्ता हो रही होगी।
नहीं कहा ताई, जल्दी चलिए वापस....

पलामू टाइगर रिज़र्व,
दक्षिणी प्रमंडल